

क्षमता विस्तार आधारभूत संरचना परियोजनाओं का शिलान्यास समारोह



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) ने आज क्षमता विस्तार योजना के अंतर्गत अपनी प्रमुख आधारभूत संरचना परियोजना के शिलान्यास समारोह के साथ एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। यह कार्यक्रम आईआईटी इंदौर के नालंदा सभागार में आयोजित किया गया और सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ओडिशा से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ओडिशा के माननीय राज्यपाल एवं ओडिशा के मुख्यमंत्री माननीय श्री मोहनचरण मांझी की गरिमामयी उपस्थिति में वर्चुअल माध्यम से इसकी आधारशिला रखी। इस अविस्मरणीय अवसर पर, मध्यप्रदेश सरकार के जल संसाधन विभाग के कैबिनेट मंत्री माननीय श्री तुलसी सिलावट, माननीय मुख्यमंत्री जी की ओर से मध्यप्रदेश राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए आईआईटी इंदौर में आयोजित समारोह में शामिल हुए। उच्चतर शिक्षा वित्तपोषण एजेंसी (HEFA) के माध्यम से स्वीकृत, तृतीय चरण के आधारभूत संरचना विकास के अंतर्गत ₹624.57 करोड़ की इस विस्तार परियोजना में अत्याधुनिक शैक्षणिक भवनों, आवासीय सुविधाओं और सामान्य एवं उपयोगिता सेवाओं के निर्माण के साथ-साथ उन्नत उपकरणों की खरीद भी शामिल है। प्रमुख परियोजनाओं में शैक्षणिक पॉड, व्याख्यान कक्ष परिसर, औद्योगिक अनुसंधान पार्क, डिजाइन विभाग, आवासीय परिसर, छात्र गतिविधि केंद्र और आगतुक छात्रावास शामिल हैं। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए, माननीय कैबिनेट मंत्री, श्री तुलसी सिलावट ने कहा, “यह मध्य प्रदेश के लिए गर्व की बात है कि आईआईटी इंदौर ऐसी दूरदर्शी परियोजनाओं के साथ अपनी क्षमता का विस्तार कर रहा है। नई आधारभूत संरचना छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए बेहतर अवसर प्रदान करेगी और साथ ही राज्य के समग्र विकास में योगदान देगी। मैं मध्य प्रदेश राज्य में बहने वाली नर्मदा बेसिन की 1000 किलोमीटर से अधिक लंबाई के मानचित्रण और परिसर में जल संरक्षण के लिए आईआईटी इंदौर के प्रयासों की भी सराहना करता हूँ, जिससे आसपास के क्षेत्र में भू-जल स्तर में वृद्धि हुई है।

आईआईटी इंदौर की संकाय सदस्य प्रतिष्ठित एजीयू नेचुरल हैज़ार्ड्स मिटिगेशन अवार्ड 2025 से सम्मानित



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग की प्रोफेसर नीलिमा सत्यम को अमेरिकन जियोफिजिकल यूनियन (एजीयू) नेचुरल हैज़ार्ड्स मिटिगेशन अवार्ड 2025 से सम्मानित किया गया है। यह प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्रोफेसर सत्यम के भूस्खलन अध्ययन, भूकंप इंजीनियरिंग और आपदा जोखिम में कमी के क्षेत्र में उनके अग्रणी कार्य के लिए दिया गया है। उनका शोध प्राकृतिक आपदाओं की भविष्यवाणी, निगरानी और रोकथाम के लिए नई रणनीतियाँ विकसित करने के लिए व्यावहारिक विज्ञान और इंजीनियरिंग को एक साथ जोड़ता है, जिसका उद्देश्य भारत और दुनिया भर में कमजोर समुदायों की सुरक्षा करना है। प्रोफेसर सत्यम ने भू-तकनीकी जांच, रिमोट सेंसिंग अनुप्रयोग और भूस्खलन संभावित क्षेत्रों के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिससे दुनिया भर में मजबूत बुनियादी ढांचे का निर्माण और आपदा जोखिम में कमी में योगदान हुआ है। इस पर, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने कहा, “प्रो. नीलिमा सत्यम की यह उपलब्धि उनकी असाधारण निष्ठा और आईआईटी इंदौर में नवाचार की भावना का प्रमाण है। उनके शोध कार्य से न केवल हमारा संस्थान वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ा है, बल्कि आपदा जोखिम में कमी और जलवायु लचीलापन के क्षेत्र में भारत की कोशिशों को भी मजबूती मिली है।” यह उपलब्धि आईआईटी इंदौर की अनुसंधान में उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है और आपदा प्रबंधन और जलवायु लचीलापन से संबंधित गंभीर चुनौतियों से निपटने में भारत की बढ़ती भूमिका को भी रेखांकित करती है।

हिंदी पखवाड़ा - 2025

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर की राजभाषा समिति द्वारा 29 सितंबर, 2025 को हिंदी पखवाड़ा - 2025 के सफलतापूर्वक आयोजन के साथ समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। समारोह में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। वहीं, इस अवसर पर सम्मानित अतिथि के रूप में संस्थान के अधिष्ठाता (प्रशासन) प्रोफेसर संदीप चौधरी और विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्थान के कुलसचिव श्री एस. पी. होता भी मौजूद रहे। इस दौरान, समारोह की अध्यक्षता प्रोफेसर राजेश कुमार द्वारा की गई। इस समारोह की शुरुआत गणमान्य अतिथियों को नन्हे पौधे प्रदान करके की गई। समारोह में "वि.प्र.म." नामक संस्थान गृह पत्रिका का विमोचन किया गया, जो मूल रूप से संस्थान के पीएचडी शोध प्रबंधों के सारांश का हिंदी अनुवाद है। संस्थान में हिंदी पखवाड़ा - 2025 के अंतर्गत कुल 6 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इस पर, समारोह के अध्यक्ष प्रोफेसर राजेश कुमार ने कहा, "राजभाषा हिंदी हमारे राष्ट्र की आत्मा और एकता का प्रतीक है। इसका संवर्द्धन देश की प्रगति और संवाद की सरलता को सुनिश्चित करता है।" वहीं, संस्थान के निदेशक व मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुहास एस. जोशी ने सबसे पहले सभी विजेता प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दी और कहा, "वि.प्र.म." पत्रिका, जिसमें पीएचडी शोध प्रबंधों के सारांश संकलित हैं, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विविध आयामों को एक ही मंच पर प्रस्तुत करती है। यह संकलन नवीनतम वैज्ञानिक खोजों, अनुसंधानों और नवाचारों की झलक देकर शोधार्थियों तथा पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।" संस्थान के अधिष्ठाता (प्रशासन) व सम्मानित अतिथि प्रोफेसर संदीप चौधरी ने सभी पुरस्कृत प्रतिभागियों को आशीर्वाचन देते हुए कहा "काव्य-सम्मेलन राजभाषा हिंदी की मधुर अभिव्यक्ति और रचनात्मकता का उत्सव है। यह आयोजन भाषा के प्रति प्रेम और सांस्कृतिक समरसता को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।" इस पर, संस्थान के कुलसचिव व विशिष्ट अतिथि श्री एस. पी. होता ने कहा "हिंदी पखवाड़ा केवल भाषा का उत्सव नहीं, बल्कि हमारी पहचान और राष्ट्र की आत्मा को महसूस करने का अवसर है। यह आयोजन हमें हिंदी के माध्यम से ज्ञान, संस्कृति और संवाद की नई दिशाओं से जोड़ता है।" वहीं, हिंदी पखवाड़ा - 2025 के पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान, कुल 50 से अधिक प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं नकद इनाम के साथ पुरस्कृत किया गया। "भारती: काव्य सम्मेलन" के सफल आयोजन ने राजभाषा हिंदी की साहित्यिक गरिमा को और ऊँचाई दी। इस दौरान, चार अतिथि कवियों की सृजनधर्मिता और श्रोताओं की सहभागिता ने कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। यह आयोजन भाषा, संस्कृति और संवेदना का अद्भुत संगम सिद्ध हुआ। निश्चित ही ऐसे सम्मेलन हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समारोह के अंत में, राजभाषा अधिकारी श्री राजीव पाण्डेय ने सभी गणमान्य अतिथिगण, प्रतिभागियों, संकाय सदस्यगण, अधिकारीगण, कर्मचारीगण, छात्रगण एवं विशेषकर राजभाषा समिति के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया, जिन्होंने इस हिंदी पखवाड़ा - 2025 के सफल आयोजन में अहम भूमिका निभाई।



सस्टेनेबल माइक्रो-प्लाज्मा मेटल 3डी प्रिंटिंग तकनीक

आईआईटी इंदौर के शोधकर्ताओं ने एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के साथ नई मेटल 3डी प्रिंटिंग तकनीक विकसित की है, जो उद्योगों द्वारा मेटल के पार्ट्स बनाने के तरीके को बदलने का विश्वास दिलाती है - जिससे यह प्रक्रिया अधिक हरित, अधिक किफायती और अधिक बहुमुखी बन जाएगी। आईआईटी इंदौर के संकाय सदस्य, प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन के नेतृत्व में, डॉ. मयूर सुधाकर सावंत और डॉ. पंकज कुमार की टीम ने μ -प्लाज्मा मेटल एडिटिव मैनुफैक्चरिंग (μ P-MAM) विकसित की है, जो एक अत्याधुनिक विधि है जो उच्च गुणवत्ता वाले धातु घटकों को परत दर परत प्रिंट करने के लिए प्लाज्मा (आयनीकृत गैस) के एक विशेष रूप का उपयोग करती है। पारंपरिक मेटल 3डी प्रिंटिंग तकनीकों से भिन्न, यह नई तकनीक बहुत कम बिजली का उपयोग करती है और हानिकारक गैसों का उत्सर्जन नहीं करती है, जिससे यह एयरोस्पेस, रक्षा, स्वास्थ्य सेवा और टूलींग जैसे उद्योगों के लिए एक स्थायी विकल्प बन जाती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके इस तकनीक को और बेहतर बनाने पर काम चल रहा है, जिससे बेहतर नियंत्रण और गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके।



एग्रीकनेक्ट कार्यशाला



आईआईटी इंदौर, आईसीएआर-एनएसआरआई इंदौर, आईसीएआर-सीआईईई भोपाल और सी-डैक पुणे द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, मध्य प्रदेश द्वारा वित्त पोषित, दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यक्रम, एग्रीकनेक्ट कार्यशाला का उद्घाटन 16 सितंबर, 2025 को किया गया, जिसका उद्देश्य टेक्नोलॉजी डेवलपर्स, कृषि हितधारकों और किसानों को एक एकीकृत मंच पर लाना था। इस अवसर पर, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव, श्री के. के. सिंह सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थिति रहे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रौद्योगिकी की वास्तविक भूमिका सीमांत किसानों, जो भारतीय कृषि के आधार हैं, को सशक्त बनाने में निहित है। उन्होंने एग्रीहब को देश भर में नवाचार के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बनाने में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर विचार साझा करते हुए, आईआईटी इंदौर के निदेशक, प्रोफेसर सुहास जोशी ने कहा, “एग्रीकनेक्ट, जमीनी स्तर पर वास्तव में महत्वपूर्ण तकनीकी नवाचारों को विकसित करने के लिए आईआईटी इंदौर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। चुनौती केवल समाधान तैयार करने की नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने की भी है कि वे खेत के प्रत्येक किसान तक पहुँचें। एग्रीहब जैसे सहयोगी प्लेटफार्मों के माध्यम से, हम किसानों को सुलभ, मापनीय और सतत नवाचारों से सशक्त बनाने की आकांक्षा रखते हैं जो भारत के कृषि पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करते हैं।” एग्रीहब की प्रमुख अन्वेषक प्रोफेसर अरुणा तिवारी ने कहा, “अगले दो दिनों में, प्रतिभागी विशेषज्ञ वार्ता, नवाचार प्रदर्शन, उद्योग के दृष्टिकोण और हितधारक राउंडटेबल बैठकों में भाग लेंगे, जिसमें जीनोमिक्स और फेनोमिक्स-आधारित फसल सुधार, सटीक कृषि, ड्रोन अनुप्रयोग और छवि विश्लेषण, और एआई-आधारित रोग और कीट निदान जैसे क्षेत्र शामिल होंगे।” यह कार्यशाला किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), गैर-सरकारी संगठनों, शोधकर्ताओं और नवप्रवर्तकों को समाधान विकसित करने के लिए एक सहयोगात्मक मंच प्रदान करती है। एफपीओ और एनजीओ के साथ एग्रीहब सहयोग को मजबूत करना।; किसानों की क्षमता निर्माण, उद्यमिता के अवसर और मजबूत मार्केट संबंध; इत्यादि।



राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के उच्चतर शिक्षा विभाग ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार (एनएटी) 2025 के लिए देश भर के उच्चतर शिक्षा संस्थानों (एचईआई) और पॉलिटेक्निक से 21 प्रतिष्ठित शिक्षकों के चयन की घोषणा की गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की परिकल्पना के तहत 2023 में स्थापित, यह पुरस्कार उन शिक्षकों को सम्मानित करता है जो शिक्षण में नवाचार, समर्पण और उत्कृष्टता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यह गर्व की बात है कि आईआईटी इंदौर के रसायन विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. देबायन सरकार को मूल विज्ञान (प्योर साइंस) श्रेणी में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 के लिए चुना गया। यह पुरस्कार भारत की माननीय राष्ट्रपति द्वारा 5 सितंबर, 2025 (राष्ट्रीय शिक्षक दिवस) को नई दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किया गया। डॉ. सरकार का चयन नवोन्मेषी, समावेशी और जिज्ञासा-आधारित शिक्षण पद्धतियों को आगे बढ़ाने में उनके उत्कृष्ट योगदान का प्रमाण है। वर्षों से, उन्होंने अनगिनत छात्रों को न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र-निर्माण के मूल्यों को अपनाने के लिए भी प्रेरित किया है।



ल्यूकेमिया के बेहतर इलाज के लिए नई दवा तकनीक प्रदान की



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) ने ब्लड कैंसर (ल्यूकेमिया) के इलाज के लिए एक नई दवा विकसित करने हेतु एक महत्वपूर्ण तकनीक डीके बायोफार्मा को प्रदान करके कैंसर से लड़ाई में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह नवाचार एक्यूट लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया (एएलएल), जो कि ब्लड कैंसर नामक गंभीर बीमारी है, के उपचार में सुधार पर केंद्रित है, जो अक्सर बच्चों और युवाओं को प्रभावित करता है। वर्तमान में, एएलएल के रोगियों का इलाज एल-एस्पेरेजिनेज़ नामक दवा से किया जाता है, जो कैंसर कोशिकाओं को आवश्यक पोषक तत्व से वंचित करके काम करती है। हालाँकि, इस दवा के मौजूदा रूपों में अक्सर गंभीर दुष्प्रभाव होते हैं, जैसे कि लीवर डैमेज करना, एलर्जी और नर्वस सिस्टम से जुड़ी समस्याएँ। ये दुष्प्रभाव उपचार को बहुत कठिन बना देते हैं, खासकर उन बच्चों के लिए जिन्हें लंबे समय के लिए देखभाल की आवश्यकता होती है। आईआईटी इंदौर के बायोसाइंसेज एंड बायोमैडिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर अविनाश सोनवणे और उनकी शोध टीम द्वारा विकसित एल-एस्पेरेजिनेज़ का नया इंजीनियर्ड वर्जन इन समस्याओं के समाधान के लिए डिज़ाइन किया गया है।

सिर्फ पानी और वाष्पीकरण से उत्पन्न होगी बिजली

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) के प्रोफेसर और छात्रों ने एक ऐसा अभूतपूर्व उपकरण विकसित किया है जो बिना किसी सूर्यप्रकाश, बैटरी या सक्रिय उपकरण की आवश्यकता के, केवल पानी और हवा का उपयोग करके बिजली उत्पन्न करता है। यह उपकरण शांति से जल वाष्पीकरण की प्राकृतिक प्रक्रिया का उपयोग करके वातावरण से तापीय ऊर्जा निकालता है, जिसे छोटे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए सम्पूर्ण और सतत बिजली में परिवर्तित किया जाता है। यह प्रमुख शोध आईआईटी इंदौर के सस्टेनेबल एनर्जी एंड एन्वायरन्मेंटल मटेरियल्स (एसईईएम) लैब में विकसित हुआ है, जिसका नेतृत्व प्रोफेसर धीरेंद्र के. राय और उनकी शोध टीम के सदस्य खुशवंत सिंह कर रहे हैं।

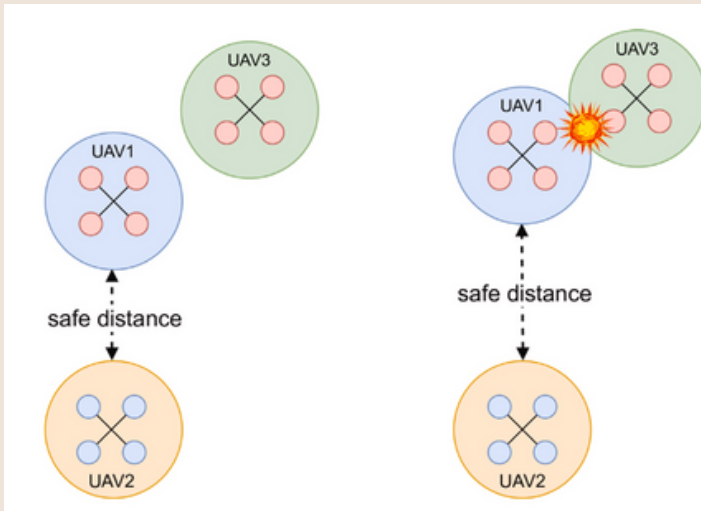


3डी प्रिंटिंग इनोवेशन का लाइसेंस वीफ्यूज मेटल प्राइवेट लिमिटेड

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर ने अपनी एडवांस्ड माइक्रो-एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग तकनीक का लाइसेंस वीफ्यूज मेटल प्राइवेट लिमिटेड (VFUse Metal Pvt. Ltd.) को देकर अनुसंधान को वास्तविक दुनिया के समाधान में बदलने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। यह साझेदारी इस बात का एक मजबूत उदाहरण है कि कैसे शैक्षणिक नवाचार उद्योग को लाभान्वित कर सकते हैं और आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत देश की आत्मनिर्भरता के लिए प्रयास का समर्थन कर सकते हैं। "लेज़र डेकल ट्रांसफर (एलडीटी) आधारित μ -3D प्रिंटर" नामक यह तकनीक आईआईटी इंदौर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित की गई है। इस टीम में प्रोफेसर पलानी इयंपेरुमल आनंद, प्रोफेसर विपुल सिंह, डॉ. अंशु साहू और श्री कृष्ण तोमर शामिल हैं। इस अनूठी प्रणाली के माध्यम से थिन-फिल्म फीडस्टॉक का उपयोग करके अत्यधिक सटीक माइक्रो 3D प्रिंटिंग का कार्य किया जा सकता है, जिससे विशेष मटेरियल एफिसियेंसी प्राप्त होती है।



विशाल यूएवी समूह में टकराव से बचने के लिए नया एल्गोरिदम विकसित



आज की तेज़ी से आगे बढ़ती दुनिया में, यह सुनिश्चित करना बेहद ज़रूरी है कि मानवरहित हवाई वाहन (यूएवी) बिना किसी टकराव के संचालित होते रहें, खासकर जब यूएवी समूहों के आकार में आगे बढ़ रहे हों। हालाँकि संभावित टकरावों का पता लगाने के लिए मानक तरीके मौजूद हैं, लेकिन उनसे बचने के लिए कोई एक वैश्विक मानक नहीं है - और मौजूदा तरीकों की भी काफी सीमाएँ हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) और इंस्टीट्यूट माइन्स-टेलीकॉम (आईएमटी), फ्रांस के शोधकर्ताओं ने अब एक नया टकराव-निवारण एल्गोरिदम विकसित किया है जो बड़े यूएवी समूहों के लिए सुरक्षित, सुचारू और अधिक कुशल उड़ानों का विश्वास दिलाता है। यह सफलता आईआईटी इंदौर के कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के मैथ ऑफ डेटा साइंस एंड सिमुलेशन (एमओडीएसएस) लैब के प्रोफेसर कपिल आहूजा और श्री अमित राज और आईएमटी के अनुसंधान विभाग के प्रोफेसर यान बुस्नेल के नेतृत्व में एक संयुक्त शोध प्रयास के माध्यम से प्राप्त हुई है।

मानव-वन्यजीव संघर्ष का समाधान करने के लिए समझौता जापान पर हस्ताक्षर

वन्यजीव संरक्षण और सतत वन प्रबंधन की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए, राज्य वन अनुसंधान संस्थान (एसएफआरआई), जबलपुर ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), इंदौर के साथ समझौता जापान (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस सहयोग का उद्देश्य मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और अन्य अत्याधुनिक तकनीकों का लाभ उठाना है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ रेलवे लाइन विस्तार परियोजनाओं और वन्यजीव प्राकृतिक वासों के पास अन्य रैखिक बुनियादी ढाँचा गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्र हैं। इस समझौता जापान हस्ताक्षर समारोह में एसएफआरआई के निदेशक श्री प्रदीप वासुदेव और एसएफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार के साथ-साथ आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी, अनुसंधान एवं विकास के डीन प्रोफेसर अभिरूप दत्ता और खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. सौरभ दास भी उपस्थित थे। एसएफआरआई ने मध्य प्रदेश में वानिकी और वन्यजीव अनुसंधान में लंबे समय से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जबकि मध्य भारत का एक प्रमुख प्रौद्योगिकी संस्थान, आईआईटी इंदौर, सामाजिक कल्याण के लिए नए समाधान विकसित करने में अग्रणी रहा है। यह साझेदारी इस क्षेत्र में वानिकी और वन्यजीव अनुसंधान को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।



शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में पेटेंट फ़ाइलिंग में 112% की वृद्धि दर्ज

भारत के नवाचार परिदृश्य में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) ने शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में पेटेंट फ़ाइल करने में 112% की वृद्धि दर्ज की है। इस वर्ष 70 पेटेंट फ़ाइल करने के साथ, जो कि पिछले वर्ष 33 थे, आईआईटी इंदौर ने डीप-टेक रिसर्च, ट्रांसलेशनल इनोवेशन और एंटरप्रेन्यूरशिप के एक प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी प्रतिष्ठा बनाई है। इस वर्ष की पेटेंट फ़ाइलिंग की एक प्रमुख विशेषता स्वास्थ्य सेवा इनोवेशन की प्रबलता है, जो महत्वपूर्ण सामाजिक चुनौतियों के लिए प्रौद्योगिकी-संचालित समाधान विकसित करने पर संस्थान के दृढ़ निश्चय को दर्शाता है। खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग ने एक और उपलब्धि हासिल की है, जिसने अपनी पहली फाइलिंग के साथ संस्थान के पेटेंट पोर्टफोलियो में अपनी शुरुआत की। इस वृद्धि के साथ, आईआईटी इंदौर की कुल पेटेंट फाइलिंग की संख्या अब 215 हो गई है, जिनमें से 102 पहले ही स्वीकृत हो चुकी हैं - जिनमें दो पेटेंट संयुक्त राज्य अमेरिका के और दो चीन के हैं - जो संस्थान की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति को दर्शाता है। इस मज़बूत पोर्टफोलियो के पूरक के रूप में दो औद्योगिक डिज़ाइन पंजीकरण और तीन ट्रेडमार्क आवेदन हैं, जो आईआईटी इंदौर के बौद्धिक संपदा योगदान को और व्यापक बनाते हैं।

दीक्षांत समारोह 2025



आईआईटी इंदौर द्वारा 12 जुलाई, 2025 को 2025 बैच के 13वें दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। कुल 813 डिग्री प्राप्तकर्ताओं में से 707 समारोह में उपस्थित थे। इस बैच में 340 बी.टेक, 1 बीटेक + एम.टेक, 132 एम.टेक, 106 एमएससी, 131 पीएचडी, 28 एमएस (रिसर्च) और 75 एमएसडीएसएम छात्र शामिल थे। इस अवसर पर, एचसीएल के सह-संस्थापक, पद्म भूषण डॉ. अजय चौधरी मुख्य अतिथि थे। आईआईटी इंदौर के शासी मंडल के अध्यक्ष डॉ. के. सिवन ने समारोह की अध्यक्षता की और आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रो. सुहास एस. जोशी ने इस गरिमामयी कार्यक्रम की मेजबानी की। वहीं, आईआईएम इंदौर के निदेशक प्रो. हिमांशु राय भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के श्री कदम माधव मुकुंद ने सभी यूजी छात्रों के बीच सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इस पर, डॉ. के. सिवन ने कहा, "जब आपने पहली बार आईआईटी इंदौर में कदम रखा होगा, तो आप अपने साथ गहरी जिज्ञासा और अदम्य महत्वाकांक्षा लेकर आए होंगे। आज, आप न केवल इंजीनियर, वैज्ञानिक, शोधकर्ता और नवप्रवर्तक बनकर जा रहे हैं, बल्कि समस्या-समाधानकर्ता, सिस्टम-थिंकर और उभरते हुए लीडर भी बन रहे हैं।" वहीं, प्रो. सुहास एस. जोशी ने कहा, "इस वर्ष 813 छात्र डिग्री प्राप्त कर रहे हैं, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव और संस्थान के लिए गौरव का क्षण है। इस वर्ष के दीक्षांत समारोह को विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनाने वाली बात हमारे शैक्षणिक कार्यक्रमों में उल्लेखनीय वृद्धि है।"

चिकित्सा के क्षेत्र में आईआईटी इंदौर की पर्यावरण-अनुकूल सफलता

आईआईटी इंदौर के शोधकर्ताओं ने नाइट्रोजन आधारित केमिकल कम्पाउंड बनाने के लिए एक ऐसा स्मार्ट और पर्यावरण-अनुकूल तरीका विकसित किया है जिसका व्यापक रूप से दवाओं में उपयोग किया जाता है। हेटरोसाइकिल के रूप में जाने जाने वाले ये कम्पाउंड एलर्जी, कैंसर, डिप्रेशन और अन्य स्थितियों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाओं में प्रमुख घटक हैं। परंपरागत रूप से, इन कम्पाउंड को बनाने में सख्त प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है, जिसमें उच्च तापमान और बड़ी मात्रा में महंगे या हानिकारक केमिकल शामिल हैं। अब, विजिबल लाइट विशेष रूप से नीली रोशनी का उपयोग करके, वैज्ञानिकों ने कमरे के तापमान पर इन अणुओं का उत्पादन करने का एक आसान, सुरक्षित और ऊर्जा-बचत वाला तरीका खोज लिया है। यह शोध नाइट्रोजन युक्त कम्पाउंड के एक विशेष वर्ग पर केंद्रित है जिसे पाइरिडो[1,2-a] पाइरीमिडिन-4-वन्स कहा जाता है। इन कम्पाउंड में एक सपाट और कठोर संरचना होती है, जो उन्हें मानव शरीर में लक्ष्यों से आसानी से अटैच होने में मदद करती है, जिससे वे बीमारियों के इलाज में उपयोगी होते हैं। एलर्जी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पर्मिरोलस्ट जैसी दवाएँ और कैंसर, स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी और सूजन के लिए अन्य संभावित उपचार इसी संरचना पर आधारित हैं। इस परियोजना के मुख्य अन्वेषक डॉ. उमेश ए. क्षीरसागर ने कहा, "हमारा लक्ष्य एक ऐसी प्रक्रिया विकसित करना था जो न केवल कुशल हो बल्कि पर्यावरण के अनुकूल भी हो। आसान परिस्थितियों में विजिबल लाइट का उपयोग करके, हमने कम पर्यावरणीय प्रभाव और अधिक किफायती कीमत पर महत्वपूर्ण औषधीय कम्पाउंड को संश्लेषित करने का एक मार्ग विकसित किया है।" इस पर, आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने कहा, "यह शोध इस बात का एक बेहतरीन उदाहरण है कि कैसे मौलिक विज्ञान सतत तकनीकी प्रगति के रूप में आगे विकसित हो सकता है। आईआईटी इंदौर में, हम ऐसे शोध को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं जो नवाचार को पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ जोड़ता है।" यह नई विधि न केवल किफायती और कुशल है, बल्कि रसायन विज्ञान के लिए एक हरित और स्वच्छ दिशा का भी प्रतिनिधित्व करती है। यह स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरणीय स्थिरता दोनों को आगे बढ़ाने के लिए बहुत आशाजनक है।

16वीं आईआईई आईसीसीसीएनटी 2025 आयोजित

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर में आईआईई इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन कंप्यूटिंग, कम्युनिकेशन एंड नेटवर्किंग टेक्नोलॉजीज (आईसीसीसीएनटी) के 16वें संस्करण का शुभारंभ 06 जुलाई, 2025 को हुआ। इस कार्यक्रम का उद्घाटन आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी ने किया, जो इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रोफेसर सूर्य प्रकाश (सम्मेलन अध्यक्ष, आईआईटी इंदौर), प्रोफेसर प्रकाश दुरईसामी (सम्मेलन सह-अध्यक्ष, यूनिवर्सिटी ऑफ़ विस्कॉन्सिन, यूएसए) के नेतृत्व में आयोजित आईसीसीसीएनटी 2025 में विभिन्न देशों के विद्वानजन उपस्थित हुए, जिसमें विचारों और नवाचारों की विविधता को प्रदर्शित किया गया। इस सम्मेलन में नासा (NASA), आईआईटी इंदौर, आईआईटी दिल्ली और आईआईटी कानपुर सहित प्रमुख संस्थानों और संगठनों के विशेषज्ञ प्रमुख योगदानकर्ताओं के रूप में शामिल हो रहे हैं।



मेहता फैमिली फाउंडेशन द्वारा बायोसाइंसेज और सस्टेनेबिलिटी के नए स्कूल स्थापित

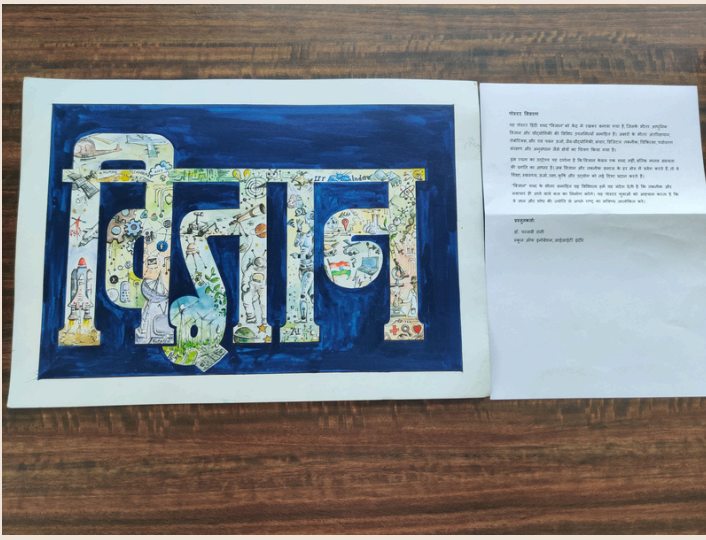


अठारह महीने की रणनीतिक चर्चा और योजना के बाद, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर (आईआईटी इंदौर) और मेहता फैमिली फाउंडेशन (एमएफएफ) को आईआईटी इंदौर परिसर में दो प्रमुख शैक्षणिक निकायों की स्थापना की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है: मेहता फैमिली स्कूल ऑफ बायोसाइंसेज एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग व मेहता फैमिली स्कूल ऑफ सस्टेनेबिलिटी। यह परिवर्तनकारी साझेदारी बायोसाइंसेज, बायोमेडिकल इंजीनियरिंग और सस्टेनेबिलिटी के तेज़ी से विकसित होते क्षेत्रों में शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के साझा दृष्टिकोण से प्रेरित है। दोनों स्कूल भारत और दुनिया की भविष्य की विज्ञान संबंधी और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए डिज़ाइन किए गए इनोवेटिव, रिसर्च-आधारित अंडरग्रेजुएट, पोस्टग्रेजुएट, डॉक्टरेट और सर्टिफिकेट प्रोग्राम ऑफ़र करेंगे।

सीमेंट-मुक्त कंक्रीट से भविष्य का निर्माण

आईआईटी इंदौर ने पर्यावरण-अनुकूल निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए एक नए प्रकार का कंक्रीट विकसित किया है जिसमें सीमेंट का उपयोग नहीं होता है। यह सफलता आईआईटी इंदौर के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अभिषेक राजपूत और उनकी शोध टीम को मिली है। जियोपॉलिमर तकनीक का उपयोग करके, उन्होंने उच्च-क्षमता वाला कंक्रीट बनाया है जो न केवल पर्यावरण की रक्षा में मदद करता है, बल्कि पारंपरिक कंक्रीट की तुलना में बेहतर प्रदर्शन और लंबे समय तक चलने वाला भी है। यह नया कंक्रीट कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को 80% तक कम कर सकता है और स्थानीय सामग्रियों के उपयोग से निर्माण लागत में 20% तक की कमी ला सकता है। यह न केवल टिकाऊ होता है, बल्कि किफ़ायती भी होता है। इसकी सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक यह है कि यह बहुत कम समय में अत्यधिक मज़बूती प्राप्त कर लेता है। यह केवल तीन दिनों में 80 MPa से अधिक कंप्रेसिव क्षमता प्राप्त कर लेता है। इस तीव्र क्षमता विकास के कारण, यह सैन्य बंकरों, पुलों, आपदा राहत संरचनाओं, पूर्वनिर्मित रेलवे स्लीपरों और राजमार्ग फुटपाथ मरम्मत जैसी अत्यावश्यक निर्माण परियोजनाओं में उपयोग के लिए एकदम सही है। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने इस नवाचार की सराहना करते हुए कहा, "यह इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे आईआईटी इंदौर सतत प्रौद्योगिकी के माध्यम से राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में योगदान दे रहा है। इस तरह के विकास भारत के हरित बुनियादी ढाँचे और कार्बन तटस्थता के दृष्टिकोण के अनुरूप हैं।"





प्रोफेसर सुहास एस जोशी, निदेशक
 प्रोफेसर संदीप चौधरी, अधिष्ठाता (प्रशासन)
 श्री एस. पी. होता, कुलसचिव
 श्री राजीव पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी

राजभाषा समिति

प्रोफेसर नीरज कुमार शुक्ला, संयोजक
 प्रोफेसर शरद गुप्ता, सदस्य
 डॉ. अभिषेक यादव, सदस्य
 सुश्री पूजा तिवारी, सदस्या
 सुश्री मिताली दवे, सदस्या
 श्री शिशिर कुमार (सदस्य सचिव)



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान इंदौर
खंडवा रोड, सिमरोल, इंदौर
मध्य प्रदेश - 453552